शास्त्रों में सभी नाम काम के आधार से हैं, जैसे यहाँ कुछ व्याख्याएँ दी हैं :-

अदिति	अदिति-न दीयते खण्ड्यते ब्रहत्वात् इत्यदिति अर्थात् जो कुंती की तरह कौमार्य से खंडित नहीं की जाती। 'भारतमाता' तस्याः पुत्री भारती-सरस्वती वा। कुन्ती {कुं (भूमिं देहं वा)+उनत्ति+झिच्+ङीष्} कुन्तिभोज की पुत्री।
अनन्त	नास्त्यन्तः गुणानामस्य-जिसके गुणों का अंत नहीं है अर्थात् चन्द्रधर महादेव। {जैसेः11/37}
अर्यमन्-	अर्यं-श्रेष्ठं मिमीते मा+कनिन-सूर्य। {जैसेः10/29} {सदा डिटैच चैतन्य ज्ञान-सूर्य शिवज्योति}
अश्वत्थं-	न श्वश्चिरं तिष्ठति सृष्टिवृक्ष। (बंदर जैसा) चंचल मन रूपी अश्व तो हनुमान / पीपल है। {जैसेः15/1}
भीष्म-पितामह	भीष्म का अर्थ-भयंकर, जो सर्प की भाँति भयंकर विषैला शास्त्रीय ज्ञान उगलते हों। पितामह (1/11-12)-अर्थात् कलियुग अंत के उन भयंकर बाबाओं या साधुओं को भीष्मपितामह कहेंगे, जो 'परमात्मा सर्वव्यापी' का उल्टा ज्ञान सुनाकर खास भारत और आम सारे विश्व धर्मों के लोगों की बुद्धि को भटका देते हैं। हद-बेहद के कांग्रेसी कौरवों, नेताओं और पूंजीवादी धृतराष्ट्रों द्वारा परबाबा की तरह उनका बहुत सम्मान किया जाता है; क्योंकि प्रभावित प्रजा से वोट और फिर नोट भी लेना है ना!

परंब्रह्म-	बृंहति वर्धते बृंह्+मनिन्-जो बड़े/वृद्ध रूप में माननीय है- परमब्रह्म। {जैसेः-3/15}
देव-	दीव्यति आनंदेन क्रीडति वा अर्थात् आनंद से जो खेल खिलाता है वह-देवता। {जैसेः11/14}
धेनु-	धीयते पीयते वत्सैःधेट्+नु+इच्च-बच्चों के द्वारा जिसका (ज्ञान) दूध पिया जाता है। {जैसेः10/28}
धृतराष्ट्र-	धृतं राष्ट्रं येन सः (सबसे बड़े-2 पूँजीपति, जिन्होंने चालाकी से गरीबों की धन-सम्पत्ति नोटों से वोटों की राजनीति द्वारा हड़प ली हो)।
द्रोणाचार्य-	कलियुग-अंतकाल के धुरंधर पण्डित-विद्वान-आचार्य, जिनका उत्पत्ति स्थान है द्रोणः=कलशः। (मिट्टी का) द्रोण+ अच् अर्थात् शास्त्रीय ज्ञान रूपी देहभान की मिट्टी से बनी बुद्धि का अज्ञान कलश।
दुः+र्योधन-	5 स्टार होटलों आदि में भ्रष्टाचारी कामेन्द्रिय का दुष्ट युद्ध करने-कराने वाले कलियुगी राजनैतिक नेताएँ, जो चुनाव काल में व्यक्तिगत ग्लानि से भरे जहरीले धर्म, राज्य, जाति और भाषा भेदी निष्फल और व्यर्थ भाषणबाज़ी के बॉम्ब बरसाकर बेकायदे बनी प्रजातंत्र सरकार में अपने ऊँचे-2 तबक्कों में बैठे निरीह साधारण प्रजा का शोषण करते और कराते हैं।
गाण्डीव-	गाण्डि ग्रन्थिरस्यरस्ति-वज्र की गांठ से बना हुआ लचीली देह का पुरुषार्थ रूपी धनुष, जो सोम, वरुण और (रूद्र रूप) अग्नि के पास भी रहा था। काँटों के संसार रूपी जंगल में भिन्न-2 धर्म-खण्डों में बँटे खांडववन का संहार करने के लिए इसका निर्माण हुआ था और देव-रक्षित था। {जैसेः-1/30}
हृषीकेश-	ज्ञानेन्द्रियों रूपी घोड़ों से भी क्षरित न होने वाला अमोघवीर्य ईश्वर। {जैसेः-1/15, 2/9}
ईश्वरः-	ईश+वरच्-महादेव, कामदेव, चैतन्यात्मा। {जैसेः-4/6, 15/8} {कामविकार अंदर है।}
जनार्दन-	जनैः+अर्द्यते-याच्यते पुरुषार्थ लाभाय। {जैसेः-1/36} {अवढरदानी परमेश्वर महादेव}
जयद्रथ-	जयत्+रथः अर्थात् जिसका विशालकाय विदेशी अरबियन देह रूपी रथ ही जय पाता हो। {जैसेः11/34}

कौन्तेय–	**कुन्त्याः अपत्यं अर्थात् कुंती पुत्र अर्जुन। {**जैसेः–1/27, 2/14**} {**कुं देहं (भानं) दारयति**}**
केशव–	**केशाः प्रशस्ताः सन्त्यस्य–जिसके ज्ञान के केश फैले हुए हैं अर्थात् महादेव। {जैसेः1/31}**
कृष्ण–	**कर्षत्यरीन्–कर्षति+अरीन् महाप्रभाव शक्त्या अर्थात् जो शक्ति के महाप्रभाव से विकारों रूपी शत्रुओं की खिंचाई करता है। {**जैसेः–1/28**}** और **{**आत्मस्थिति वालों का आकर्षणकर्ता त्रिनेत्री महादेव**}**
कौरव–	**(कुत्सितं रवं यस्य) कौ+रव अर्थात् कौओं की तरह कुत्सित, व्यर्थ भाषणबाज़ी का सरासर झूठा शोरगुल करने वाले, जिन्होंने धर्महीन धर्म+निः+अपेक्ष सरकार बनाकर आचार–विचार, आहार–व्यवहार का 5 स्टार होटलों में सर्वथा त्याग कर दिया और जिन्होंने अवतरित परमात्मा को जानने पर भी,मानने से साफ इन्कार कर दिया है; जैसे (रावयते लोकान्) अर्थात् ('पंडित सोइ जोइ गाल बजावा' जैसा) लोगों को रुलाने वाले, प्रकांड पंडित रावण जैसी बोल–2 की निष्फल भाषणबाज़ी बहुत करते हैं।**
मधुसूदन–	**मधु–जैसे मीठे कामविकार रूपी दैत्य को मारने वाले कामनाथ शिव, मधु/शराब के तमोगुण से पैदा हुआ दैत्य। {**जैसेः–1/35, 2/1**}**
मंत्र–	**मन्त्यते, गुप्तं परिभाष्यते–गुप्त बातचीत, भाषणादि। {**जैसेः–9/16**}**
नकुल–	**नास्ति कुलं यस्य–जो न पांडव कुल के हैं, न कौरव या यादव कुल के, कभी भारत के और कभी विदेशी; इन्होंने पश्चिम दिशा के विदेशियों पर विजय पाई थी और अत्यन्त सुंदर, सुडौल, हृष्टपुष्ट हैं। {**जैसेः1/16**}**
नारद–	**नारं परमात्मविषयकं ज्ञानं ददाति–परमात्म विषयक नार=ज्ञान देने वाला अर्थात् नारद। {**जैसेः10/13**}**
पंडा–	**पंडयति संचयति–इकट्ठा करता है। ज्ञान–धन की बात है। {**अजन्मा/अगर्भा होने से अखूट ज्ञान भंडारी शिव का बड़ा बच्चा महादेव जो भगवान नहीं है, बड़े–ते–बड़ा देव है।**}**

पाण्डव–	**भगवान को जानने, मानने और आदेशानुसार चलने वाले परमात्मा पंडा/पांडु के थोड़े से पुत्र जो कलियुगांत & सतयुगादि के संगमयुग में मुक्ति–जीवन्मुक्तिधाम का रास्ता बताने वाले पण्डा/पांडु शिवबाबा के पुत्र पांडव हैं जिनमें युधि+स्थिर जैसे स्थिरबुद्धि पांडव भी हैं जो जीते जी स्वर्ग में जाते हैं।**
पार्थ–	**पृथिव्याः ईश्वरः–पृथ्वी का शासनकर्ता– विश्वविजयी अर्जुन (विश्वनाथ)। {**जैसेः–1/25, 2/3**}**
सहदेव–	**सह दीव्यति, क्रीडति वा–जो परमात्मा के साथ ही खेलते हैं या देवसहयोगी हैं। {**जैसेः–1/16**}**
शाश्वतं–	**सदाकाल रहने वाला। {**जैसेः–2/20, 18/62**} {**तीनों काल में सदा रहने वाला महादेव/आदम।**}**
वार्ष्णेय–	**वृष्णि वंश से उत्पन्न अर्थात् ज्ञानवर्षक ज्ञानियों के कुल से उत्पन्न–वृष्णि का अर्थ है–ज्ञानवर्षा करने वाला मेघ; वरुणवंशी वार्ष्णेय। {**जैसेः–1/41, 3/36**}**
वासुदेव–	**धन दाता परमपिता वसुदेव अर्थात् प्रैक्टिकल ज्ञानधनदाता शिवपुत्र महादेव। {**जैसेः–7/19, 10/37**}**
विभुं–	**वि=विशेष रूप से+भू भवनं वा–विराट रूप में, विशेष रूप से प्रगट होता है। {**जैसेः–10/12**}**
विभूति–	**विविधं भवति सृष्टिः+अनया–जिससे विशेष प्रकार की सृष्टि उत्पन्न होती है। अतिमानवशक्ति, समृद्धि**
व्यास	**{वि+आस्} –जो जीवन में ज्ञानमंथनार्थ विशेष रूप से बैठता है। {**जैसेः–18/75**}**
यातयामं–	**गतः उपभोगकालो यस्य तं–जिसका उपभोग काल समाप्त हो चुका है। {**जैसेः–17/10**}**
युधिष्ठिर–	**युधिः+स्थिरः–धर्मयुद्ध में स्थिर रहने वाला परंब्रह्म, जो पांडवों में सबसे प्रधान हैं और धर्मराज कहे जाते हैं। {**जैसेः–1/16**}**